नवीन पाठ्यक्रमानुसार

उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग द्वारा आयोजित

UPSSSC

राजस्व लेखपाल

ग्राम्य समाज एवं विकास

प्रधान संपादक

Anand K. Mahajan

लेखन सहयोग

परीक्षा विशेषज्ञ समिति

कम्प्यूटर ग्राफिक्स

बालकृष्ण, चरन सिंह

संपादकीय कार्यालय

12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002

9415650134

Email : yctap12@gmail.com

website : www.yctbooks.com/www.yctfastbook.com/www.yctbooksprime.com

© All Rights Reserved with Publisher

प्रकाशन घोषणा

सम्पादक एवं प्रकाशक आनन्द कुमार महाजन ने आर.ए. सिक्योरिटी प्रिंटर्स प्रयागराज से मुद्रित करवाकर,
वाई.सी.टी. पब्लिकेशन प्रा. लि., 12,, चर्च लेन, प्रयागराज-211002 के लिए प्रकाशित किया।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने में सम्पादक एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है
फिर भी किसी त्रुटि के लिए आपका सहयोग एवं सुझाव सादर अपेक्षित है।

मूल्य : 295/-

किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज होगा।

विषय सूची

ग्राम्य समाज एवं विकास

- लेखपाल नवीनतम पाठ्यक्रम 3-4
- ग्राम्य विकास भारतीय संदर्भ में 5-11
- ग्राम्य विकास कार्यक्रम 12-20
- ग्राम्य विकास – योजनाएं एवं प्रबंधन 21-33
- ग्राम्य विकास शोध प्रणालियां 34-39
- ग्रामीण स्वास्थ्य योजनाएं 40-45
- ग्रामीण सामाजिक विकास 46-61
- ग्रामीण विकास एवं भूमि सुधार 62-79
- पंचायती राज 80-90
- केन्द्र व राज्य सरकार की ग्राम्य विकास से संबंधित योजनाएं 91-106
- लेखपाल पद एवं उसके कार्य सम्बन्धी महत्वपूर्ण तथ्य 107-110
- लेखपाल परीक्षा में ग्राम्य समाज एवं विकास से संबंधित विगत वर्षों के प्रश्नों का हल 111-128

उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग
लेखपाल नवीनतम पाठ्यक्रम (दिनाँक : 08/12/2021)

परीक्षा योजना

क्र. सं.	विषय	प्रश्नों की संख्या	निर्धारित अंक	समय-अवधि
1.	सामान्य हिन्दी	25	25	02 घण्टा (120 मिनट)
2.	गणित	25	25	
3.	सामान्य-ज्ञान	25	25	
4.	ग्राम्य समाज एवं विकास	25	25	
	योग	**100**	**100**	

नोट- उपर्युक्त परीक्षा हेतु निगेटिव मार्किंग (ऋणात्मक अंक) दिये जाने हैं, जो प्रश्न के पूर्णांक का 1/4 अंक (25 प्रतिशत) होगी। बहुविकल्पीय प्रकृति के प्रश्न पूछे जायेंगे।

पाठ्यक्रम

1. सामान्य हिन्दी

समास, पर्यायवाची, विलोम, तत्सम एवं तद्भव, संधियाँ, वाक्यांशों के लिए एक शब्द निर्माण, लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे, वाक्य संशोधन, लिंग, वचन, कारक, काल, वर्तनी, त्रुटि से सम्बन्धित अनेकार्थी शब्द, अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्न।

2. गणित

अंकगणित एवं सांख्यिकी

संख्या पद्धति, प्रतिशतता, लाभ-हानि, सांख्यिकी, आंकड़ों का वर्गीकरण, बारम्बारता, बारम्बारता बंटन, सारणीयन, संचयी बारम्बारता। आंकड़ों का निरूपण, दण्ड चार्ट, पाई चार्ट, आयत चित्र, बारम्बारता बहुभुज। केन्द्रीय माप, समान्तर माध्य, माध्यिका एवं बहुलक।

बीजगणित

लघुत्तम समापवर्त्य एवं महत्तम समापवर्त्य और उनमें सम्बन्ध, युगपत समीकरण, द्विघात समीकरण, गुणन खंड, क्षेत्रफल प्रमेय।

रेखागणित

त्रिभुज सम्बन्धी पाइथागोरस प्रमेय, त्रिभुज, आयत, वर्ग, समलम्ब, समान्तर चतुर्भुज, समचतुर्भुज के परिमाप तथा क्षेत्रफल, वृत्त की परिधि एवं क्षेत्रफल।

3. सामान्य-ज्ञान

सामान्य विज्ञान, राष्ट्र तथा अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की सामयिक घटनाएं, भारत का इतिहास, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन, भारतीय राजव्यवस्था तथा अर्थव्यवस्था, विश्व भूगोल तथा जनसंख्या, सामान्य विज्ञान के प्रश्न, दैनिक अनुभव तथा प्रेक्षण से सम्बन्धित विषयों सहित विज्ञान के सामान्य प्रबोध एवं जानकारी पर होंगे, जिसकी किसी भी सुशिक्षित व्यक्ति से अपेक्षा की जा सकती है, जिसने किसी वैज्ञानिक विषय का अध्ययन नहीं किया हो।

भारत के इतिहास के अन्तर्गत आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक पक्षों की व्यापक जानकारी पर ध्यान देना होगा। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन पर अभ्यर्थियों से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की प्रकृति तथा विशेषता, राष्ट्रवाद का अभ्युदय तथा स्वतन्त्रता प्राप्ति के बारे में सामान्य ज्ञान अपेक्षित है। भारतीय राज व्यवस्था तथा अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत भारतीय राज व्यवस्था, भारतीय संविधान, भारत की अर्थव्यवस्था तथा नियोजन के व्यापक लक्षणों की जानकारी पर प्रश्न होंगे।

विश्व भूगोल तथा जनसंख्या में केवल विषयों की सामान्य जानकारी की परख होगी जिसमें भारत के भूगोल में भौतिक/पारिस्थितिक, आर्थिक, सामाजिक, जनांकिकीय पक्षों पर विशेष बल दिया जाएगा। अभ्यर्थियों से उपरोक्त की सामान्य जानकारी अभिज्ञा विशेषतः उत्तर प्रदेश के परिप्रेक्ष्य में अपेक्षित है।

कम्प्यूटर के प्रारम्भिक ज्ञान से सम्बन्धित प्रश्न होंगे।

4. ग्राम्य समाज एवं विकास

ग्राम्य विकास भारतीय संदर्भ में, ग्राम्य विकास कार्यक्रम, ग्राम्य विकास योजनाएं एवं प्रबन्धन, ग्राम्य विकास शोध प्रणालियां, ग्रामीण स्वास्थ्य योजनाएं, ग्रामीण सामाजिक विकास, ग्राम्य विकास और भूमि सुधार, त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था, केन्द्र व राज्य सरकार की ग्राम्य विकास से सम्बन्धित योजनाएं।

अध्याय 1

ग्राम्य विकास भारतीय सन्दर्भ में

ग्राम्य विकास : भारतीय सन्दर्भ में-

ग्रामीण विकास मंत्रालय के अनुसार ''ग्रामीण विकास का उद्देश्य ग्रामीण जनसंख्या की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को सुधारना तथा गरीबी, बेरोजगारी और असमानताओं को दूर करना है।''

भारतीय ग्रामीण विकास की विशेषताएँ-

1. कृषि पर अत्यधिक निर्भरता
2. छोटे और सीमांत किसानों की बहुलता
3. बेरोजगारी व गरीबी की समस्या
4. जातीय व लैंगिक असमानताएँ
5. अविकसित आधारभूत संरचना

ग्रामीण समाज की संकल्पना-

→ संयुक्त राज्य जनगणना ब्यूरो के अनुसार, किसी विशिष्ट स्थान की जनसंख्या के आकार और घनत्व के आधार पर ग्रामीण समुदाय को परिभाषित किया जाता है।

→ भारत में '**ग्रामीण**' शब्द को आमदनी के आधार पर परिभाषित किया जाता है, ग्राम से तात्पर्य '**आमदनी देने वाला गाँव**'।

ग्रामीण समाज का आदर्श नमूना-

→ ग्रामीण शब्द को '**ग्राम**', '**देहात**' या '**लोक समाज**' जैसे शब्दों से अदल-बदल कर प्रयुक्त किया जाता है।

→ ग्रामीण समाज के लिए सर्वाधिक ग्राम शब्द का ही प्रयोग करते हैं।

→ देहात अर्थात् कंट्रीसाइड शब्द का प्रयोग आमतौर पर पश्चिमी जगत में किया जाता है।

प्राचीन भारत में ग्रामीण विकास प्रशासन से संबंधित शब्दावलियां	
ग्राम शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख	वैदिक साहित्य में
ग्रामणी	ग्राम प्रशासन अधिकारी
गोप	हदबंदी का कार्य
गौल्मिक	ग्रामीण प्रशासक
ग्रामपति/महत्तर	ग्राम प्रशासन
उर	लोगों की संस्था
पटवारी	ग्राम प्रधान का सहयोगी
मौजा	गांवों का समूह

ग्रामीण जनसांख्यिकी-

→ वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार ग्रामीण जनसंख्या 68.84% है। उल्लेखनीय है कि भारत में सर्वप्रथम जनगणना वर्ष 1872 में लार्ड मेयों के समय हुई थी, परन्तु पहली विधिवत जनगणना वर्ष 1881 में लार्ड रिपन के समय हुई थी, तभी से प्रति दस वर्षों में जनगणना होती आ रही है।

→ वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में ग्रामीण लिंगानुपात 949 था जो शहरी लिंगानुपात (929) से अधिक है।

→ वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या वाले चार राज्य-
1. उत्तर प्रदेश- 15.25 करोड़
2. बिहार - 9.23 करोड़
3. पश्चिम बंगाल - 6.21 करोड़
4. महाराष्ट्र - 6.15 करोड़

→ प्रतिशत की दृष्टि से सर्वाधिक ग्रामीण आबादी वाले चार राज्य-
1. हिमाचल प्रदेश- 90%
2. बिहार - 88.70%
3. असम - 85.92%
4. ओडिशा - 83.32%

→ न्यूनतम ग्रामीण आबादी (जनगणना 2011) सिक्किम में है।

→ वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार प्रतिशत की दृष्टि से न्यूनतम ग्रामीण आबादी गोवा में है तथा प्रतिशत की दृष्टि से सर्वाधिक शहरी आबादी भी गोवा में है।

→ नागरिक पंजीकरण प्रणाली (Civil Registration System, सी.आर.एस.) जन्म, मृत्यु, विवाह आदि महत्वपूर्ण घटनाओं को लगातार रिकॉर्ड करने की एक प्रणाली है।

→ प्रतिदर्श पंजीकरण प्रणाली (Sample Registration Survey, एम.आर.एस.) भारत के महापंजीयक द्वारा 1969-70 में शुरू की गई थी।

→ पंजीकरण का कार्य राष्ट्रीय स्तर पर नियमित रूप से किया जाता है, यह मूलतः एक दोहरी रिकॉर्ड प्रणाली पर आधारित जनसांख्यिकी सर्वेक्षण है।

→ यह राज्य (बड़े राज्यों) के साथ-साथ राष्ट्रीय स्तर पर ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के लिए आकलन प्रदान करता है।

ग्रामीण जनसंख्या का आकार-

→ **1901 से 2001** तक आबादी के **चार विशेष चरण** हैं–
- ➢ चरण I : 1901–1921 ऋणात्मक वृद्धि
- ➢ चरण II : 1931–1951 स्थिर वृद्धि
- ➢ चरण III : 1961–1981 तीव्र उच्च वृद्धि
- ➢ चरण IV : 1991–2001 उच्च वृद्धि और साथ में घटने के निश्चित संकेत

→ भारत की ग्रामीण आबादी वितरण प्रतिरूप के महत्वपूर्ण कारक है : कृषि योग्य भूमि की उपलब्धता, मृदा की गहराई और उर्वरकता, भूमि जल स्तर की गहराई, सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता, आदि।

ग्रामीण जनसंख्या में लैंगिक संरचना-

→ जनसांख्यिकीय गतिशीलता का सबसे महत्वपूर्ण पहलू लिंग अनुपात है।

→ लिंगानुपात एक महत्वपूर्ण सामाजिक सूचक है, जिसका प्रयोग एक निश्चित समय में किसी समाज में महिलाओं और पुरुषों के बीच मौजूद समानता को मापने के लिए किया जाता है।

→ यह अनुपात मृत्यु दर में लिंग विभेद, लिंग के आधार पर प्रवासन, जन्म के समय लिंग अनुपात और कभी-कभी जनसंख्या गणना में लिंग विभेद के बीच क्रिया का परिणाम है।

→ **2011** की जनगणना के अनुसार, भारत में लिंग अनुपात प्रति **1000 पुरुषों पर 943 महिलाएं** हैं, जो **2001** की जनगणना में दर्ज **933** से **10 अंक** अधिक है।

→ भारत में लिंगानुपात के घटने की प्रवृत्ति के कुछ महत्वपूर्ण कारण हैं : (1) बाल्यावस्था में बालिकाओं की तरफ ध्यान न देने के कारण उनकी उच्च मृत्यु दर, (2) अधिक मातृ मृत्यु दर, (3) लिंग का चयन कर कन्या भ्रूण हत्या, शिशुपात, और (4) कन्या शिशु हत्या।

→ सर्वाधिक लिंग अनुपात **(1084) केरल** में पाया गया है।

→ भारत में शिशु आबादी (0−6 वर्ष की आयु समूह) में लिंग अनुपात **2001** में **927** से घटकर **2011** में **919** हो गया है।

→ आयु संरचना भी जनसंख्या की एक मूलभूत विशेषता है। यह न केवल वृद्धि दर को प्रभावित करती है बल्कि यह कुल आबादी में श्रम शक्ति के अनुपात का और निर्भरता अनुपात का भी निर्धारण करने में सहायता करती है।

→ मूलरूप से आबादी की आयु संरचना का निर्धारण तीन कारकों अर्थात् **प्रजनन, मृत्यु** और **प्रवासन** द्वारा होता है।

→ भारत की जनसंख्या की आयु संरचना का आधार चौड़ा है और ऊपर की ओर घटता हुआ शिखर है जो उच्च जनसंख्या वृद्धि और बेरोजगारी की बढ़ती संख्या का द्योतक है।

→ भारत में वर्तमान उच्च जनसंख्या वृद्धि के प्रमुख कारणों में से एक कारण भारत के अधिकांश राज्यों में कम उम्र में विवाह की प्रथा का प्रचलन है।

→ भारत में बाल विवाह नियंत्रण अधिनियम, 1978 के अनुसार बालिकाओं के लिए विवाह की **न्यूनतम आयु 18** वर्ष निर्धारित की गई है।

→ 21 दिसंबर, 2021 को लोक सभा **में बाल विवाह निषेध (संशोधन) विधेयक, 2021** पेश किया गया, जिसमें महिलाओं के विवाह की न्यूनतम आयु 21 वर्ष करने का प्रावधान है।

→ श्रमिकों के एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने को प्रवासन कहते हैं।

अशोधित जन्म दर	वर्ष में प्रति 1000 की जनसंख्या में होने वाले जन्मों की संख्या
अशोधित मृत्यु दर	वर्ष में प्रति 1000 की जनसंख्या में होने वाली मौतों की संख्या
जनसांख्यिकी	जनसंख्या संबंधी विज्ञान जो मुख्यतया निश्चित समय में जनसंख्या के आकार वितरण, विशेषताओं, वृद्धि और संरचना के सांख्यिकीय अध्ययन से संबद्ध है।
आश्रित अनुपात	जनसंख्या में 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों और 60 या 65 वर्ष एवं अधिक आयु के वृद्धों की संख्या जिसे 15 से 59/64 वर्ष की आयु के वयस्कों की संख्या के अनुपात के रूप में दर्शाया जाता है।
शिशु मृत्यु दर	एक वर्ष में प्रति 1000 जीवित जन्मों (एक वर्ष से कम आयु के) में शिशुओं की होने वाली मौत की संख्या।
जनसंख्या घनत्व	किसी विशिष्ट स्थान पर प्रति वर्ग किलोमीटर पर लोगों की रिहायश
प्रवासन	कुछ समय के लिए एक जगह छोड़कर दूसरी जगह बस जाना
जनसंख्या वृद्धि दर	प्राकृतिक घटोत्तरी/बढ़ोत्तरी और निवल प्रवासन के कारण एक नियत वर्ष में वह दर जिस पर जनसंख्या बढ़ती (या घटती) है और इसे आधार जनसंख्या के प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया जाता है।
लिंगानुपात	जनसंख्या में प्रति 1000 पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या

ग्राम्य विकास के विभिन्न आयाम-

1. कृषि एवं संबंधित गतिविधियाँ- कृषि एवं संबंधित गतिविधियों का प्रमुख क्षेत्र ग्रामीण क्षेत्र है-

→ आर्थिक समीक्षा 2024-25 के अनुसार प्राथमिक क्षेत्रक (कृषि, पशुधन, वन एवं मत्स्य) का सकल मूल्य वर्धन (GVA) में 17.94% योगदान है।

→ देश में सर्वाधिक रोजगार प्रदाता प्राथमिक क्षेत्रक है।

→ आवधिक श्रम बल सर्वे के अनुसार कृषि क्षेत्र में श्रम बल की कुल भागीदारी 46.1% है जो अन्य क्षेत्रों की तुलना में सर्वाधिक है।

→ पशुधन जनसंख्या गणना 2019 के अनुसार देश में कुल पशुधन 535.78 मिलियन है। ग्रामीण क्षेत्र में कृषि के बाद पशुपालन ही आजीविका का मुख्य स्रोत है।

→ दुग्ध उत्पादन में भारत का पहला स्थान है। उत्तर प्रदेश देश में दुग्ध का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है।

ग्रामीण क्षेत्र से संबंधित मुद्दे-

1. **बेरोजगारी-** आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण के अनुसार वर्ष 2024 में ग्रामीण बेरोजगारी 4.2% थी। एन.एस.एस.ओ के अनुसार "बेरोजगारी से आशय है जब कोई व्यक्ति चालू मजदूरी दरों पर कार्य करने हेतु इच्छुक है परन्तु उसे कार्य नहीं मिल पा रहा है तो इस स्थिति को बेरोजगारी कहते हैं।"

ग्राणीण क्षेत्रों में बेरोजगारी के प्रकार-

1. **प्रच्छन्न बेरोजगारी-** प्रच्छन्न बेरोजगारी मुख्यतः कृषि क्षेत्र में पाई जाती है। प्रच्छन्न बेरोजगारी से आशय है जब कामगार के किसी कार्य में लगे होने के बावजूद अतिरिक्त उत्पादन पर कोई प्रभाव न पड़े (सीमान्त उत्पादकता शून्य हो) अर्थात आवश्यकता से अधिक किसी कार्य में कामगारों का लगे होना।

निर्धनता की संकल्पना एवं मापदंड- गरीबी एक बहुआयामी परिघटना है, जो व्यक्तियों की बुनियादी जीवन स्तर के लिए आवश्यक संसाधनों तक पहुँचने में असमर्थता को दर्शाती है।

गरीबी का वर्गीकरण

1. **सापेक्ष गरीबी-** यह आर्थिक विषमता को दर्शाता है। समाज में एक व्यक्ति अन्य व्यक्तियों की तुलना में गरीब है।
2. **निरपेक्ष गरीबी-** जब कोई व्यक्ति जीवन हेतु बुनियादी आवश्यकताओं को पूर्ण करने में असमर्थ होता है।

स्वतंत्रता पूर्व निर्धनता का आकलन-

→ दादा भाई नौरोजी ने अपनी पुस्तक "पॉवर्टी एण्ड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया" में 1867-68 के मूल्यों पर प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष 16 रूपये से 35 रूपये के बीच गरीबी रेखा का सबसे पहले अनुमान लगाया था।

* बॉम्बे योजना (1944) में प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष 75 रूपये की गरीबी रेखा का सुझाव दिया था।

■ **गरीबी आकलन हेतु निम्न समितियाँ-**

* **वी.एम.दांडेकर और एन.रथ समिति (1971)-** वी. एम. दांडेकर कमेटी ने सबसे पहले प्रति व्यक्ति प्रतिदिन 2,250 कैलोरी के न्यूनतम कैलोरी मानदंड को पूरा करने के लिए आवश्यक उपभोग स्तर निर्धारित किया।

* **डॉ.वाई.के. अलघ कमेटी-** कमेटी ने गरीबी रेखा को ग्रामीण क्षेत्रों में प्रति. व्यक्ति प्रतिदिन 2400 किलो कैलोरी और शहरी क्षेत्रों में प्रति व्यक्ति प्रतिदिन 2100 किलो कैलोरी की औसत प्रति व्यक्ति दैनिक कैलोरी आवश्यकता को पूरा करने के लिए प्रति व्यक्ति उपभोग व्यय स्तर के रूप में परिभाषित किया था।

* **लकड़ावाला समिति (1993)-** लकड़ावाला समिति ने अलघ कमेटी की गरीबी निर्धारण की परिभाषा को बनाए रखा था।

* **तेंदुलकर समिति (2009)-** कमेटी ने राष्ट्रीय निर्धनता रेखा को निर्धारित करने हेतु ग्रामीण क्षेत्रों के लिए 816 रूपये तथा शहरी क्षेत्रों के लिए 1000 रूपये निर्धारित किये थे।

* **रंगराजन समिति (2014)-** कमेटी ने गरीबी रेखा हेतु ग्रामीण क्षेत्रों के लिए 972 रूपये तथा शहरी क्षेत्रों के लिए 1407 रूपये निर्धारित किये थे।

→ राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय [NSSO] के आँकड़ों के आधार पर नीति आयोग वर्तमान में गरीबी रेखा संबंधी आकलन करता है।

→ नीति आयोग राष्ट्रीय बहुआयामी निर्धनता सूचकांक जारी कर निर्धनता संबंधी आकलन देता है।

→ जून 2025 विश्व बैंक ने वैश्विक गरीबी अनुमानों में एक बड़े संशोधन की घोषणा की है। अब अन्तर्राष्ट्रीय गरीबी रेखा $ 2.15/दिन (2017 पीपीपी) से बढ़ाकर $ 3.00/दिन (2021 पीपीपी) हो गई है। अतः भारत में 2022-23 में, नई अन्तर्राष्ट्रीय गरीबी रेखा $ 3.00 रेखा के तहत गरीबी 5.25% (अर्थात 75.2 मिलियन) थी।

■ **ग्राम्य विकास हेतु सरकार के प्रयासः-**

संवैधानिक प्रयास-

1. **नीति निदेशक तत्व**

1. **अनुच्छेद-38** लोगों के कल्याण को बढ़ावा देना तथा असमानता कम करना
2. **अनुच्छेद-39 (b) & (c)** संसाधनों का समान वितरण सुनिश्चित करना तथा धन के संकेन्द्रण को रोकना
3. **अनुच्छेद-40** ग्राम पंचायतों का संगठन
4. **अनुच्छेद-43** ग्रामीण क्षेत्र में कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देना।

2. **73वाँ सविधान संशोधन अधिनियम 1992-** पंचायतों को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया गया।

अन्य प्रयास-

1. मनरेगा [महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी अधिनियम 2005]

→ मनरेगा के अन्तर्गत अकुशल श्रमिकों को न्यूनतम 100 दिनों का रोजगार प्राप्त होता है।

→ यदि 15 दिनों के अंदर कार्य नहीं दिया जाएगा तो न्यूनतम वेतन का एक चौथाई भत्ता देने का प्रावधान है।

2. **राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (2011)-** स्वयं सहायता समूह और महिलाओं के सशक्तीकरण पर बल देना।
3. **प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण-** वर्ष 2016 में योजना को लांच किया गया था। इस योजना का उद्देश्य वर्ष 2022 तक सभी को घर मुहैया कराना था।
4. **प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना-** प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना वर्ष 2000 में केंद्रीय क्षेत्र की योजना के रूप में शुरू की गई थी। इसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों को जोड़ने वाली बारहमासी सडकों का विकास करना था।

स्वास्थ्य, शिक्षा और स्वच्छता-

I. **राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन-** 12 अप्रैल 2005 में राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन को लांच किया गया था। इस योजना का उद्देश्य बाल मृत्यु दर, मातृत्व मृत्यु दर, महिला स्वास्थ्य, बाल स्वास्थ्य आदि में सुधार करना।

II. स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण- 2 अक्टूबर 2014 को भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य 2 अक्टूबर 2019 तक देश को खुले में शौच से मुक्त बनाना।

III. शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009- 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध कराना।

कृषि से संबंधित-

1. **कृषि उपज मंडी समिति अधिनियम-**किसानों को उचित मूल्य दिलाना।
2. **प्राथमिक कृषि ऋण समितियाँ**
ग्राम-स्तरीय सहकारी ऋण समितियाँ हैं जो त्रिस्तरीय सहकारी ऋण संरचना में अंतिम कड़ी के रूप में कार्य करती हैं। इनका नेतृत्व राज्य स्तर पर राज्य सहकारी बैंक करते हैं। प्राथमिक कृषि ऋण समितियों का मुख्य उद्देश्य अपने सदस्यों को अल्प एवं मध्यम अवधि के ऋण उपलब्ध कराना है।
3. **हरित क्रांति-** 1966-67 कृषि उत्पादकता में सुधार करना वैज्ञानिकों ने गेहूँ और चावल जैसी फसलों के लिए उच्च उपज वाले बीज विकसित किए जिन्हें मैक्सिको और फिलीपींस जैसे देशों में विकसित किया गया था। भारत में हरित क्रांति का श्रेय एम.एस. स्वामीनाथन को दिया जाता है। पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश हरित क्रांति से सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्र थे।

* **प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना-** वर्ष 2016 में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना लागू की गई थी।
* **प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम-किसान)-** 24 फरवरी 2019 को केंद्रीय क्षेत्रक की योजना के रूप में पीएम-किसान योजना को लांच किया गया था। इस योजना के अन्तर्गत 6000 रूपये प्रतिवर्ष तीन किश्तों के रूप में दिया जाता है।
* **राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013-** राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम ग्रामीण एवं शहरी आबादी को क्रमश; 75% तथा 50% को कवर करता है।
* **श्वेत क्रांति-** इस क्रांति ने भारत को दुनिया के सबसे बड़े दूध उत्पादकों में से एक बना दिया, जिससे डेयरी किसानों की आजीविका में सुधार हुआ और ग्रामीण विकास को बढ़ावा मिला।
* प्रोफेसर वर्गीज कुरियन को भारत में श्वेत क्रांति का जनक कहा जाता है।
* इस क्रांति को ऑपरेशन फ्लड के नाम से भी जाना जाता है। ऑपरेशन फ्लड 1970 के दशक में प्रारम्भ किया गया था।
* वर्ष 2023-24 के आँकड़ों के अनुसार भारत में प्रति व्यक्ति दुग्ध उपलब्धता 471 ग्राम है जो वैश्विक औसत से अधिक है।
* प्रत्येक वर्ष 1 जून को अन्तर्राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के रूप में मनाया जाता है।
* उत्तर प्रदेश दूध का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है।
* स्वदेशी गोजातीय नस्लों को संरक्षित करने हेतु राष्ट्रीय गोकुल मिशन वर्ष 2014 में शुरू किया गया था।
* देश भर में डेयरी क्षेत्र में सुधार के लिए फरवरी 2014 में राष्ट्रीय डेयरी विकास कार्यक्रम को शुरू किया गया था।

ग्रामीण विकास हेतु उपाय-

1. कृषि में सुधार 2. पशुपालन को बढ़ावा 3. ग्रामीण रोजगार एवं आजीविका हेतु मनरेगा एवं स्वयं सहायता समूह को बढ़ावा देना।
4. ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं को कौशल प्रशिक्षण प्रदान करना।
5. स्वास्थ्य एवं पोषण में सुधार 6. अवसंरचनात्मक विकास

स्वतंत्रता पूर्व ग्रामीण विकास योजनाएं/कार्यक्रम		
योजनाएं/कार्यक्रम	**वर्ष**	**स्थापना**
श्री निकेतन प्रोजेक्ट	1922	गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर
इकोनामिक कानफरेंस ऑफ मैसूर	1914-18	त्रावनकोर केरल
गुड़गांव प्रोजेक्ट	1920	एफ.एल. ब्रायन
मार्टैन्डम प्रोजेक्ट	1921	डा. स्पेंसर हैच
बड़ोदा परियोजना	1932	बी.टी. कृष्णमाचारी
सेवा ग्राम योजना	1936	महात्मा गांधी
इंडियन विलेज सर्विस	1945	आर्थर टी. मोशर व बी.एन.गुप्ता
नीलोखेड़ी परियोजना	1948	एस.के. डे
इटावा परियोजना	1948	अल्बर्ट मेयर

ग्रामों के विविध स्वरूप

→ भारत की 1991 की जनगणना के आधार पर 94.7 प्रतिशत ग्रामों की आबादी पाँच हजार से कम की थी।

→ ग्रामों की आबादी के आधार पर, इन्हें तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया था –

- **26.5 प्रतिशत** ग्रामों में पाँच सौ से कम लोगों का बसेरा था;
- **48.8 प्रतिशत** ग्रामों की आबादी **500 से 2000** तक के बीच की थी; और
- **19.4 प्रतिशत** ग्रामों की आबादी **2000 से 5000** तक के बीच की थी।

→ भारत में लगभग पचास प्रतिशत ग्राम मध्यम आकार के थे।

→ भारत में ग्रामों को आकेन्द्रित (nucleated) और विस्तृत छिटपुट (dispersed) ग्रामों के रूप में भी वर्गीकृत किया जाता है।

→ आकेन्द्रित ग्रामों में सभी घर एक इकाई के रूप में एक ही जगह समूह में रहते हैं और ऐसे घरों के चारों ओर कृषि वाली जमीन होती है।

→ जब रिहायशी घर काफी बड़े क्षेत्र में फैले होते हैं और ऐसे घरों का प्रत्येक समूह कृषि वाली भूमि से अलग-अलग बंटा हुआ होता है और इसे **छिटपुट ग्राम** कहते हैं।

→ भारत में अधिकांश ग्राम संहत आकेन्द्रित (compact nucleated) किस्म के होते हैं।

ग्रामीण सामाजिक संरचना-

→ ग्रामीण समुदाय, परिवार और जाति, ग्रामीण सामाजिक संरचना के बुनियादी घटक हैं और ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के आर्थिक एवं सामाजिक जीवन को आपस में जोड़ते हैं।

→ समाज की बुनियादी इकाई, वहाँ पर रहने वाले व्यक्ति विशेष हैं।

→ एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से सम्बन्ध स्थापित करके रहते हैं और जब सबसे छोटा समूह दो व्यक्तियों से बनता है तो इसे **डियाड** (dyad) कहते हैं।

→ मानव समाज में कोई व्यक्ति विशेष या समूह अलग-थलग होकर काम नहीं कर सकता। समूहों के सामूहिक रूप को समुदाय कहा जाता है।

→ बहुत से समुदाय मिलकर समाज का गठन करते हैं।

→ **'सामाजिक संरचना'** शब्द का प्रयोग समाज के विविध भागों के **अंतःसम्बन्धों, अन्तःसंयोजन** और **अन्तःनिर्भरता** जैसे पहलुओं के सन्दर्भ में किया जाता है।

जाति व्यवस्था-

→ जाति भारतीय ग्रामों की मुख्य सामाजिक संस्था है।

→ स्थानीय भाषा में इसे **जात, जैत,** (jati, jat, Zat) आदि कहा जाता है।

→ हैरल्ड गोल्ड के अनुसार जाति **'एकाधिकार रूपी संघ'** है।

→ उच्च जाति के पुरुषों को निम्न जाति की महिलाओं से विवाह के माध्यम से ऊँचा उठाने की अनुमति थी, इसे **अनुलोम विवाह** (hypergamy) कहते हैं।

- ➢ इसके विपरीत जहाँ उच्च स्तर की महिलाओं को निम्न स्तर के पुरुषों से विवाह करने का अधिकार है अर्थात् जहाँ महिलाएं विवाह के माध्यम से निम्न स्तर की प्राप्ति करती हैं, **प्रतिलोम विवाह** (hypogamy) कहलाते हैं।

→ अनुलोम विवाहों से जन्में बच्चे जायज कहलाते हैं।

→ ग्राम को जातियों के समूह के रूप में देखा जा सकता है जहाँ प्रत्येक जाति का अपना पारम्परिक पेशा होता है।

→ जाति भारतीय ग्राम में सामाजिक संगठन का आधारभूत सिद्धांत है।

→ **वर्ग** समाज में आर्थिक असमानता के वितरण का सूचक है।

→ उत्तर प्रदेश के ग्रामों में खाद्य-उत्पादक परिवारों और उन्हें वस्तुओं एवं सेवाओं की आपूर्ति करने वाले परिवारों के मध्य संबंध के लिए विलियम एच. वाइजर ने **'जजमानी'** शब्द का प्रयोग किया है।

→ महाराष्ट्र में इस प्रकार के संबंध को 'बलूतदारी' कहा जाता है।

→ जजमानी प्रथा में कृषक का परिवार मुख्य बिंदु माना जाता है।

→ सेवा प्राप्त करने वाले को **जजमान या संरक्षक** कहा जाता है।

→ सेवा प्रदान करने वाले परिवारों को **कमीन या कामगार** कहते हैं।

→ जजमानी प्रथा की सरलतम परिभाषा 'संरक्षक-आश्रित संबंध' पर आधारित है।

ग्रामीण भारत में परिवार-

→ परिवार, मानवीय समाज का आधार है।

→ औपनिवेशिक काल के दौरान, भारत में मुख्यतया दो सांस्कृतिक विशेषताएं नज़र आती हैं और वे हैं, जाति व्यवस्था और संयुक्त परिवार।

→ संयुक्त परिवार को ऐसे सगे-सम्बन्धियों के समूह के रूप में परिभाषित किया गया है जिनका आवास एक है, जिनकी रसोई एक है और सम्पत्ति में जिनका हिस्सा एक जैसा है और जिनके धार्मिक विश्वास भी एक जैसे हैं।

→ भारत में संयुक्त परिवार पितृवंशीय (अर्थात् पिता से पुत्र तक चलने वाली परम्परा), पितृस्थनिक (अर्थात् जहाँ परिवार के सभी पुरुष सदस्य एक साथ रहते हैं और परिवार में जन्मी कन्या को शादी के बाद दूसरे घर जाना पड़ता है) और पितृसत्तात्मक (अर्थात् जहां पुरुषों की सत्ता चलती है) होते हैं।

→ बारहवीं सदी में लिखित हिन्दू विधि की प्रमुख पुस्तक; **मिताक्षरा** में संयुक्त परिवार की सर्वाधिक विशिष्ट विशेषताओं को विधिबद्ध किया गया है।

→ विस्तारित परिवार दो या अधिक एकल परिवारों का समूह है।

→ परिवार के विस्तार-समापन-पुनःस्थापन प्रक्रिया को विकासपरक चक्र कहते हैं।

ग्रामीण भारत में सत्ता विभाजन का स्वरूप-

→ श्रीनिवास ने ग्रामीण भारत में सत्ता विभाजन के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए प्रधान जाति की संकल्पना प्रस्तुत की है जो निम्नलिखित मानदंडों के रूप में परिभाषित है-

- ➢ संख्यात्मक प्रभुत्व
- ➢ आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण
- ➢ राजनीतिक सत्ता पर नियंत्रण
- ➢ उच्च आनुष्ठानिक स्थिति
- ➢ पश्चिमी शिक्षा पद्धति का सर्वप्रथम लाभ प्राप्त करने वाला वर्ग।

जन्मजात	जन्मजात स्थिति वह है जिसे मनुष्य जन्म से प्राप्त करता है।
जाति व्यवस्था	भारत में पाई जाने वाली व्यवस्था है, यह मुख्य रूप से सामाजिक स्तरीकरण की परंपरागत व्यवस्था है जो जन्मजात होती है।
आश्रित	आश्रित शब्द का अर्थ है दूसरी जाति को अपनी पेशेवर सेवाएं देने वाला।
पंचायत	किसी भी अंदर या बाहर की समस्या (लड़ाई-झगड़ें, चोरी, डकैती आदि) का समाधान करता है
समस्तरीय एकता	एक ही जाति या सामाजिक रूप से एक ही स्तर के लोगों की एकजुटता।
ऊर्ध्वाधर एकता	एक ही ग्राम से संबद्ध सोपानक्रम आधारित सामाजिक स्तरित व्यवस्था या विभिन्न जातियों से जुड़े लोगों में पाई जाने वाली एकता।

→ अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने संयुक्त राष्ट्र के माध्यम से **17 सतत् विकास लक्ष्यों (SDG)** की योजना शुरू की, जिसका उद्देश्य वर्ष 2030 तक अधिक संपन्न, अधिक समतावादी और अधिक संरक्षित विश्व की रचना करना है।

उक्त लक्ष्यों को **सितंबर, 2015** में संयुक्त राष्ट्र महासभा की शिखर बैठक में **193 सदस्य** देशों ने अनुमोदित किया था।

→ **17 सतत् विकास लक्ष्यों में (SDG)** में शामिल हैं-

1. शून्य गरीबी
2. शून्य भुखमरी
3. उत्तम स्वास्थ्य और खुशहाली
4. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा
5. लैंगिक समानता
6. स्वच्छ जल
7. सस्ती और प्रदूषण मुक्त ऊर्जा
8. उत्कृष्ट कार्य और आर्थिक वृद्धि
9. उद्योग, नवाचार और बुनियादी सुविधाएं
10. असमानताओं में कमी
11. संवहनीय शहर और समुदाय
12. संवहनीय उपभोग और उत्पादन
13. जलवायु कार्रवाई
14. जलीय जीवों की सुरक्षा
15. स्थलीय जीवों की सुरक्षा
16. शांति, न्याय और सशक्त संस्थाएं
17. लक्ष्य हेतु भागीदारी

ग्रामीण विकास से संबंधित महत्वपूर्ण संस्थाएँ-

→ **नाबार्ड -** राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक की स्थापना शिवरमन कमेटी की सिफारिशों पर राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक अधिनियम, 1981 के तहत 12 जुलाई 1982 को की गई थी।

→ **ट्राइफेड -** ट्राइफेड की स्थापना अगस्त 1987 में की गई थी। इसका मूल उद्देश्य आदिवासियों द्वारा एकत्रित या कृषि से उत्पादित लघु वनोपज के व्यापार को बढ़ावा देना है।

→ **क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक -** नरसिम्हन समिति की सिफारिश पर सर्वप्रथम 2 अक्टूबर 1975 में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की स्थापना ग्रामीण क्षेत्र में बैंकिंग ढाँचे को सुदृढ़ बनाने हेतु की गई थी।

→ **कृषि लागत एवं मूल्य आयोग -** इसकी स्थापना वर्ष 1965 में की गई थी। यह न्यूनतम समर्थन मूल्यों की सिफारिश करता है।

प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना-

* यह योजना वर्ष 2015 में लाँच की गई थी।
* 'प्रति बूंद अधिक फसल' इसका महत्वपूर्ण घटक है।

बागवानी से संबंधित विभिन्न कृत्तियाँ-

1.	नीली क्रांति	-	मछली उत्पादन
2.	पीली क्रांति	-	तिलहन उत्पादन
3.	लाल क्रांति	-	टमाटर उत्पादन
4.	ग्रे क्रांति	-	उर्वरक उत्पादन
5.	श्वेत क्रांति	-	दुग्ध उत्पादन
6.	गुलाबी क्रांति	-	मांस उत्पादन
7.	काली क्रांति	-	पेट्रोलियम उत्पादन
8.	सिल्वर क्रांति	-	अण्डा उत्पादन
9.	सुनहरी क्रांति	-	बागवानी उत्पादन
10.	गोल क्रांति	-	आलू उत्पादन

अभ्यास प्रश्न

1. ''ग्रामीण'' शब्द का समानार्थक क्या होगा?
(a) ग्रामवासी (b) देहात
(c) समाज (d) इनमें से कोई नहीं

2. पारंपरिक और समान जाति से गठित समाज का क्या आशय है?
(a) लोक समाज (b) ग्राम समाज
(c) व्यक्ति (d) उर

3. कृषक आंशिक संस्कृति सहित आंशिक समाज है। यह कथन किसका है?
(a) बेबर (b) मिल
(c) क्रोबर (d) स्टालिन

4. विकासवादी शहर की अवधारणा का संबंध किससे है?
(a) रैमजे म्योर (b) गौल्मिक
(c) गाडगिल (d) राबर्ट रेड फील्ड

5. ग्रामों की आबादी का आधार पर इन्हें कितनी श्रेणियों में विभक्त किया गया था?
(a) पांच (b) सात
(c) तीन (d) नौ

6. वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, भारतीय आबादी का कितना प्रतिशत हिस्सा ग्रामीण क्षेत्र में निवास करता है?
(a) 68.84% (b) 62.80%
(c) 72.00% (d) 72.01%

7. संयुक्त राज्य जनगणना ब्यूरो के अनुसार, किस आधार पर ग्रामीण समुदाय को परिभाषित किया गया है?
(a) जीवन स्तर और जनसंख्या घनत्व
(b) जीवन स्तर और जनसंख्या का आकार
(c) जनसंख्या का आकार और जनसंख्या का घनत्व
(d) इनमें से कोई नहीं

8. वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, ग्रामों की सर्वाधिक जनसंख्या किस राज्य में स्थित है?
(a) बिहार (b) प. बंगाल
(c) महाराष्ट्र (d) उत्तर प्रदेश

9. भारत के संविधान के किस अनुच्छेद के अंतर्गत अनुसूचित जनजातियों का प्रावधान है?
(a) अनुच्छेद 342 (b) अनुच्छेद 340
(c) अनुच्छेद 330 (d) अनुच्छेद 300

10. ''कृषकों से अर्ध-समाज बनता है'' यह कथन किसका है?
(a) क्रोबर (b) जॉर्ज फोस्टर
(c) राबर्ट रेडफील्ड (d) मिल्टन सिंगर

11. जब शहर में अलग-अलग लोग आ कर बसते हैं तो इन्हें किस तरह के शहर कहते हैं?
(a) समजातीय शहर (b) सामान्य शहर
(c) विजातीय शहर (d) इनमें से कोई नहीं

12. भारत में जनगणना कितने वर्षों के अंतराल में की जाती है?
(a) 10 वर्ष (b) 15 वर्ष
(c) 5 वर्ष (d) 20 वर्ष

13. भारत में सर्वप्रथम जनगणना कब की गई थी?
(a) 1870 (b) 1872
(c) 1875 (d) 1880

14. भारत में नियमित रूप से किस वर्ष से जनगणना की जा रही है?
(a) 1881 (b) 1880
(c) 1882 (d) 1875

15. वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत का लिंगानुपात कितना है?
(a) 940 (b) 943
(c) 942 (d) 933

16. उच्च स्तर की महिलाओं का निम्न स्तर के पुरुषों से होने वाला विवाह किस प्रकार का विवाह कहलाता है?
(a) अनुलोम विवाह (b) प्रतिलोम विवाह
(c) संयुक्त विवाह (d) समजाति विवाह

17. बारहवीं सदी में लिखित पुस्तक मिताक्षरा किस विधि से संबंधित है?
(a) हिन्दू विधि (b) मुस्लिम विधि
(c) ईसाई विधि (d) इनमें से कोई नहीं

18. विश्व में सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश कौन-सा है?
(a) अमेरिका (b) भारत
(c) डेनमार्क (d) चीन

19. विश्व बैंक द्वारा किस आधार पर निर्धनता का अनुमान लगाया गया है?
(a) प्रति व्यक्ति आय (b) पूंजी उत्पाद अनुपात
(c) क्रय-शक्ति समता (d) सकल घरेलू उत्पाद

20. वर्ष 1901 में प्रकाशित पुस्तक ''पावर्टी एण्ड अन ब्रिटिश रूल इन इंडिया'' किसके द्वारा लिखी गई थी?
(a) दादा भाई नौरोजी (b) एडम स्मिथ
(c) बाल गंगाधर तिलक (d) गोपाल कृष्ण गोखले

21. वर्ष 1901 से वर्ष 2001 तक की आबादी को कितने चरणों में विभाजित किया गया है?
(a) चार (b) पांच
(c) छः (d) तीन

22. भारत में सर्वाधिक लिंगानुपात किस राज्य में पाया जाता है?
(a) उत्तर प्रदेश (b) कर्नाटक
(c) केरल (d) प. बंगाल

23. मानवीय समाज का आधार निम्न में से किसे कहा गया है?
(a) गांव (b) नगर
(c) समुदाय (d) परिवार

24. अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा संयुक्त राष्ट्र के माध्यम से कितने सतत विकास लक्ष्यों की योजना शुरू की गई?
(a) 16 (b) 18
(c) 17 (d) 20

25. 21 दिसंबर, 2021 को लोक सभा में बाल विवाह निषेध (संशोधन) विधेयक, 2021 पेश किया गया, जिसके अनुसार महिलाओं के विवाह की आयु कितने वर्ष की गई?
(a) 22 वर्ष (b) 25 वर्ष
(c) 21 वर्ष (d) 20 वर्ष

26. ग्रामीण परिवार की विशेषता निम्नलिखित में से कौन सी है?
(a) संयुक्त परिवार (b) कृषि व्यवसाय
(c) अनुशासनबद्ध परिवार (d) उपर्युक्त सभी

27. भारत में संयुक्त परिवारों की सर्वाधिक संख्या मिलती है–
(a) ग्रामीण समुदाय में (b) नगरीय समुदाय में
(c) उपनगरीय क्षेत्र में (d) मलिन बस्तियों में

28. ग्रामीण समाज से संबंधित है?
(a) परिवर्तन (b) नियमशून्यता
(c) गतिशीलता (d) कृषि

29. ग्रामीण समाज निम्नलिखित में से किसका द्योतक है?
(a) विश्वसनीयता (b) जटिलता
(c) समग्रता (d) सरलता

30 ग्रामीण क्षेत्र किस प्रकार के समाज के अंतर्गत आता है?
(a) वैयक्तिक समाज (b) परम्परागत समाज
(c) आर्थिक समाज (d) सांस्कृतिक समाज

31. ग्रामीण समाज में कृषि के अतिरिक्त किए जाने वाला कार्य इनमें से कौन सा है?
(a) उद्योग (b) चिकित्सा
(c) शिक्षण-प्रशिक्षण (d) पशुपालन

32. ग्रामीण समाज के लोगों को इनमें से किस-किस आपदा का सामना करना पड़ता है?
(a) बाढ़ (b) सूखा
(c) पाला (d) उपर्युक्त सभी का

33. एक निश्चित दिशा में होने वाले निरंतर परिवर्तन को क्या कहते हैं?
(a) उद्विकास (b) विकास
(c) प्रगति (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

34. 'इंडियन विलेज' पुस्तक के लेखक हैं–
(a) एस.सी. दुबे
(b) डी.एन. मजूमदार
(c) के.एम. कपाडिया
(d) एम.एन. श्रीनिवास

उत्तरमाला

1. (a)	2. (a)	3. (c)	4. (d)	5. (c)
6. (a)	7. (c)	8. (d)	9. (a)	10. (b)
11. (c)	12. (a)	13. (b)	14. (a)	15. (b)
16. (b)	17. (a)	18. (b)	19. (c)	20. (a)
21. (a)	22. (c)	23. (d)	24. (c)	25. (c)
26. (d)	27. (a)	28. (d)	29. (d)	30. (b)
31. (d)	32. (d)	33. (a)	34. (a)	

अध्याय 2 ग्राम्य विकास कार्यक्रम

→ ''ग्राम्य विकास'' का अर्थ है लोगों का बेहतर विकास एवं सामाजिक कायाकल्प।

→ ग्रामीण विकास विभाग एवं भूमि संसाधन विभाग को मिलाकर ग्रामीण विकास मंत्रालय का गठन हुआ है।

→ ग्रामीण संस्थाओं का विकास प्रक्रिया में सहयोग लेने के लिए ''हरियाली'' कार्यक्रम की शुरुआत की गयी।

→ महिलाओं को ग्रामीण विकास में भागीदारी देने के उद्देश्य से ही पंचायतों में महिला आरक्षण व्यवस्था को लागू किया गया है।

गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम-

→ स्वतंत्रता के बाद के समय में भारत ने विभिन्न क्षेत्रों में सराहनीय सफलता हासिल की है। कृषि के क्षेत्र में हम एक समय आयात पर निर्भर थे लेकिन अब हम केवल निर्यातक ही नहीं हैं बल्कि विश्व में खाद्यान के बड़े दाताओं में से एक हैं।

→ भारत में ग्राम विकास को मुख्यतः गरीबी उन्मूलन नीतियों के संदर्भ में पहचाना जाता है।

ग्राम विकास संबंधी अंतःक्षेपों की आवश्यकता-

→ ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में गरीबी कुछ हद तक एक समान है लेकिन संख्या की दृष्टि से ग्रामीण भारत में शहरी आबादी की तुलना में **गरीबों की संख्या तीन गुणा अधिक** है।

→ देश की लगभग **तीन-चौथाई** आबादी गाँवों में रहती है और इस प्रकार अधिकतर निर्धन गाँवों में ही रहते है।

→ इसलिए गांधी जी ने कहा था कि- **''भारत गाँवों में बसता है और गाँवों के विकास के बिना देश का विकास नहीं हो सकता है। ''**

भारत में निर्धनता-

→ भारत में गरीबी को मापने के लिए आमतौर पर ''शीर्ष गणना'' (Head Count) विधि का प्रयोग किया जाता है जिससे केवल एक निश्चित आय/व्यय स्तर के नीचे के लोगों की संख्या का पता चलता है।

→ भारत में निर्धनता को **राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन** (National Sample Survey Organization : NSSO) द्वारा इकट्ठे किए गए **उपभोग और व्यय** के आँकड़ों के आधार पर मापा जाता है।

→ राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन (एनएसएसओ) मई 2019 तक भारत सरकार के सांख्यिकी मंत्रालय के अधीन काम करता था। 23 मई, 2019 को भारत सरकार ने एनएसएसओ का केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन (सीएसओ) में विलय करके राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) बनाने का आदेश पारित किया। इसका नेतृत्व सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय करेगा।

→ वर्ष 2011-12 पर आकलित सकल भारत में गरीबी हेड काउंट अनुपात 21.9% था। ग्रामीण भारत में गरीबी हेड काउंट अनुपात 25.7% था जबकि शहरी भारत में यह 13.7% था।

→ संयुक्त राष्ट्र के वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक 2019 के अनुसार वर्ष 2005-06 से 2015-16 के मध्य भारत में बहुआयामी गरीबों की संख्या में 271 मिलियन से अधिक की गिरावट दर्ज की गई।

→ संयुक्त राष्ट्र के वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक 2024 के अनुसार, 112 देशों में कुल 6.3 बिलियन में से लगभग 1.1 बिलियन लोग गरीबी का अनुभव कर रहे हैं। भारत में गरीबी दर 2005-06 में 55.1 प्रतिशत से घटकर 2019-21 में 16.4 प्रतिशत से कुछ अधिक हो गई।

गरीबी में रहने वाले सबसे अधिक लोगों वाले पाँच देश-

- भारत - 234 मिलियन
- पाकिस्तान - 93 मिलियन
- इथियोपिया - 86 मिलियन
- नाइजीरिया - 74 मिलियन
- कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य - 66 मिलियन

भारत में गरीबी उन्मूलन के दृष्टिकोण-

→ रोजगार के अवसर पैदा करना और गरीबी हटाना एक दूसरे के पूरक हैं क्योंकि रोजगार में वृद्धि गरीबी में कमी लाने का निर्धारक होती है।

→ रोजगार का अर्थ केवल कार्य में लगना नहीं है बल्कि इसका अर्थ काम में लाभकर आय या पारिश्रमिक अर्जित करना है जो लोगों का न्यूनतम स्वीकार्य जीवन स्तर जीने के लिए बुनियादी आवश्यकताएँ मुहैया करता है।

गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम-

→ ग्रामीण निर्धनों को तीन मुख्य श्रेणियों में बाँटा जा सकता है।
(1) भूधारक
(2) दक्ष या कुशल
(3) भूमिहीन और अकुशल।

→ **सामुदायिक विकास कार्यक्रम** (Community Development Programme : CDP) द्वारा ग्राम विकास की प्रारंभिक अवस्था में, गाँवों में कृषि आधारभूत संरचना और बुनियादी सुविधाएँ विकसित करने के लिए एक समुचित दृष्टिकोण अपनाया गया था।

ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा संचालित प्रमुख कार्यक्रम ग्रामीण क्षेत्रों में:-

1. महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) रोजगार देने के लिए।
2. राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एन.आर.एल.एम.) स्वरोजगार और कौशल विकास के लिए।
3. प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण (पी.एम.ए.वाई.जी.) बी.पी.एल. परिवारों को आवास उपलब्ध कराने के लिए-
4. प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (पी.एम.जी.एस.वाई.) गुणवत्तापूर्ण सड़कों के निर्माण के लिए,
5. राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम (एन.एस.ए.पी.) सामाजिक पेंशन के लिए,
6. एकीकृत जलग्रहण प्रबंधन कार्यक्रम (आई.डब्ल्यू.एम.पी.) भूमि की उत्पादकता में सुधार लाने के लिए।

→ **लघु किसान विकास एजेंसी** (Small Farmers Development Agency : SFDA) कार्यक्रम का क्रियान्वयन **1970-71** से प्रारंभ किया गया।

→ यह कार्यक्रम छोटे एवं सीमांत किसानों, खेतिहर मजूदरों और ग्रामीण काश्तकारों पर केन्द्रित था।

→ **वर्ष 1971-72** में सीमांत किसानों, खेतिहर मजदूरों और ग्रामीण कारीगरों के लिए सीमांत किसान और खेतिहर मजदूर (Marginal Formers Agricultural Laboures : MFAL एम.एफ.ए.एल.) एजेंसी कार्यक्रम भी शुरू किया गया था।

→ **एम.एफ.ए.एल.** भी **एस.एफ.डी.ए.** के समान ही था इसलिए वर्ष **1976** में **एस.एफ.डी.ए.** के साथ इसका विलय कर दिया गया। ताकि योजनाओं में दोहराव न हो और एकीकृत रूप से ग्रामीण गरीबों के उत्थान के लिए कार्य किया जा सके।

→ प्रायोगिक सघन **ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम** (पी.आई.आर.ई.पी.) नाम से एक वेतन रोजगार कार्यक्रम भी शुरू किया गया।

→ इसे **वर्ष 1975-76** में ऐसे खंडों में शुरू किया गया जिनमें बेरोजगारी पहले से व्याप्त थी।

→ इन कार्यक्रमों की दो मुख्य विशेषताएँ थीः (क) स्वरोजगार के लिए कार्यक्रम में मुख्यतः परिसंपत्ति धारकों और दक्षता वाले लोगों पर ध्यान केन्द्रित किया गया और (ख) वेतन रोजगार कार्यक्रमों में उन लागों पर ध्यान केंद्रित किया गया जिनके पास उनके शारीरिक श्रम के आलावा अन्य किसी भी प्रकार का आय का स्रोत नहीं था।

→ वर्ष 1978-79 के दौरान, एस.एफ.डी.ए. और अन्य सभी कार्यक्रमों के लाभार्थीमूलक घटकों को आपस में मिलाकर समेकित ग्रामीण विकास कार्यक्रम (Integrated Rural development Programme) के नाम से एक नया कार्यक्रम शुरू किया गया।

→ **वर्ष 1980** में **'काम के बदले अनाज कार्यक्रम'** को पुनः संगठित कर **'राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम' (NREP)** के रूप में प्रारंभ किया गया।

→ ग्रामीण कारीगरों की कुशलता को बढ़ाने और अकुशल लोगों में दक्षता का विकास करने के लिए स्वरोजगार के लिए ग्रामीण युवाओं का प्रशिक्षण (Training of the rural Youth in self Employment ट्राईसेम) के नाम से **वर्ष 1979** में आई.आर.डी.पी. का एक उप कार्यक्रम शुरू किया गया।

→ आईआरडीपी के अंतर्गत **'ग्रामीण क्षेत्रों में महिला एवं बाल विकास कार्यक्रम' (DWCRA)** शुरू किया गया।

→ ग्राम विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पूर्ण रूप से वित्तपोषित ग्रामीण मजदूर रोजगार गारंटी कार्यक्रम (Rural Labour Employment Guarantee Programme,) के नाम से 1983 में सभी क्षेत्रों में शुरू किया गया।

→ **एन.आर.ई.पी.** और **आर.एल.ई.जी.पी.** एक दूसरे के पूरक बन गए, इसलिए **ग्राम विकास मंत्रालय, भारत सरकार** ने **वर्ष 1989** में इन दोनों कार्यक्रमों को जोड़ने का निर्णय लिया। इसे जवाहर रोजगार योजना (Jawahar Rozgar Yojana) का नाम दिया गया।

→ **वर्ष 1991-92** के दौरान ग्रामीण कारीगरों पर विशेष ध्यान केंद्रित करते हुए स्वरोजगार कार्यक्रम **'ग्रामीण कारीगरों हेतु परिष्कृत औजार-किट की आपूर्ति (SITRA)** की शुरुआत की गई।

→ सुनिश्चित रोजगार योजना (Employment Assurance Scheme) के नाम से एक नया कार्यक्रम वर्ष 1992-93 में लगभग 1781 ऐसे खंडों में शुरू किया गया जहाँ पर बेरोजगारी की भयंकर समस्या थी।

→ **वर्ष 1997** में **गंगा कल्याण योजना** (Ganga Kalayana Yojana) के नाम से एक लघु सिंचाई कार्यक्रम उन छोटे और सीमांत किसानों के लिए शुरू किया गया था जो एम.डब्ल्यू.एस. के अन्तर्गत इस योग्य नहीं माने जाते थे।

स्वरोजगार संबंधी कार्यक्रम

(आई.आर.डी.पी और इसके उप कार्यक्रम)

- आई.आर.डी.पी. (समेकित ग्राम विकास कार्यक्रम)
- ट्राईसेम (स्वरोजगार के लिए ग्रामीण युवाओं का प्रशिक्षण)
- डी.डब्ल्यू.सी.आर.ए. (ग्रामीण क्षेत्रों में महिला और बाल विकास)
- एम.डब्ल्यू.एस. (दस लाख कुआँ योजना)
- एस.आई.टी.आर.ए. (ग्रामीण कारीगरों के लिए परिष्कृत औजार किट की आपूर्ति)
- गंगा कल्याण योजना।

वेतन रोजगार कार्यक्रम

- जे आर वाई (जवाहर रोजगार योजना)
- ई.ए.एस. (सुनिश्चित रोजगार योजना)

→ ग्राम विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने स्वरोजगार और वेतन रोजगार कार्यक्रमों की फिर से रूपरेखा तैयार की।

→ आई. आर. डी. पी. ट्राईसेम, डी. डब्ल्यू. सी. आर. ए., एस. आई. टी. आर. ए., एम. डब्ल्यू. एस. और जी. के. वाई. सभी छह स्वरोजगार कार्यक्रामें को एक कार्यक्रम में मिला दिया गया और इसे **स्वर्णजयंती ग्राम स्वरोजगार योजना (एसजीएसवाई)** के नाम दिया गया और इसे **1 अप्रैल, 1999** से शुरू किया गया।

→ जेआरवाई का फिर से नामकरण किया गया और इसे अप्रैल, 1999 में जवाहर ग्रामीण स्वरोजगार योजना (जेजीएसवाई) नाम दिया गया। लेकिन 2001 में जेजीएसवाई और ई.ए.एस. को एक ही कार्यक्रम में मिला दिया गया और इसे संपूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना (एसजीआरवाई) नाम दिया गया।

केन्द्र प्रायोजित योजना- ऐसी योजनाएं जिनके कार्यान्वयन हेतु वित्त की व्यवस्था केन्द्र तथा राज्य द्वारा मिलकर की जाती है।

केंद्रीय क्षेत्रक योजना- इस प्रकार की योजनाओं में आवश्यक वित्त का शत-प्रतिशत केन्द्र सरकार द्वारा वहन किया जाता है।

भारत में ग्राम विकास कार्यक्रम

वर्ष और कार्यक्रम	मुख्य उद्देश्य और कार्यक्रम के घटक
पहले के कार्यक्रम-	
सामुदायिक विकास कार्यक्रम (सीडीपी) 1952	स्थानीय स्तर पर आधारभूत ढांचे का निर्माण और शिक्षा एवं स्वास्थ्य का प्रावधान कर मानव संसाधन विकास में निवेश द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक एवं सामाजिक जीवन में स्फूर्ति लाना। यह कार्यक्रम सुपरिभाषित भौगोलिक क्षेत्रों अर्थात समुदाय विकास (सीडी) खंडों में लागू किया गया।
कृषि विकास कार्यक्रम	50 के दशक के अंत और 60 के दशक के शुरू में खाद्यान्न में कमी से अधिक अन्न उपजाओं अभियान को बल मिला।
विशेष ग्राम विकास और गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम	
क्षेत्र विकास कार्यक्रम	
पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम (एच.ए.डी.पी) 5वीं पंचवर्षीय योजना	क्षेत्रीय असंतुलन को कम से कम करना और पर्वतीय क्षेत्रों के प्राकृतिक संसाधनों तथा पारिस्थितिकीय एवं पर्यावरण विकास का प्रबंध कर आर्थिक विकास की गति को तेज करना।
सूखा प्रवण क्षेत्र विकास कार्यक्रम (डीपीएपी) 1973-74	ऐसी स्थायी परिसंपत्तियों का निर्माण करना जिससे सूखा, मजदूरी रोजगार को घोर कमी को दूर किया जा सके।
कमाण्ड एरिया विकास कार्यक्रम (सीएडीपी) 1974-75	सिंचाई की संभावनाओं का तीव्र और अधिकतम उपयोग कर कमजोर वर्गों पर जोर देते हुए कृषि फार्म का विकास करना।
मरुस्थल विकास कार्यक्रम (डीडीपी) 1977-78	पर्यावरण की क्षति को कम करने और गर्म तथा शीत मरुस्थलीय क्षेत्रों (जम्मू-कश्मीर एवं हि.प्र.) में पर्यावरण में सुधार लाना।
लक्ष्य समूह उन्मुख/स्व-रोजगार कार्यक्रम	
समेकित ग्राम विकास कार्यक्रम (आई आरडीपी) 1978-79 (स्व-रोजगार कार्यक्रम)	डीपीएपी, सीएडीए और एचडीए के लाभार्थी उन्मुख कार्यक्रमों को आपस में मिला दिया गया और उन्हें समेकित ग्राम विकास कार्यक्रम (आईआरडीपी) नाम दिया गया।

ग्रामीण क्षेत्रों में महिला एवं बाल विकास, (डीडब्ल्यूसीआरए) 1982-83	ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबों और महिलाओं को आय सृजित करने के लिए दक्षता और क्रियाकलाप प्रदान करने के लिए शुरू किया गया।
स्व-रोजगार में ग्रामीण युवाओं का प्रशिक्षण (ट्राइसेम) 1979	गरीब परिवारो के युवाओं का स्व-रोजगार शुरू करने के लिए तकनीकी और उद्यमशीलता संबंधी दक्षता प्रदान करना।
ग्रामीण कारीगरों का परिष्कृत औजार किट की आपूर्ति (एसआईटीआरए) 1992	ग्रामीण करीगरों के कार्य उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार करना जिसमें उन्हें आय सृजित करने के अवसर प्राप्त हो सकें।
गंगा कल्याण योजना (जीकेवाई) 1997	आई आर डी पी के घटक के रूप में इस कार्यक्रम का लक्ष्य गहरे कुओं के लिए गरीबी की रेखा से नीचे के किसानों को सहायता प्रदान करना था।
स्वर्ण जयंती ग्रामीण स्वरोजगार योजना (एसजीएसवाई) 1999	आईआरडीपी, डीडब्ल्यूसीआरए, ट्राइसेम, एस आईटीआरए, जीकेवाई और एमडब्ल्यूएस को एसजीएसवाई नाम के एक ही कार्यक्रम में मिला दिया गया।
मजदूरी रोजगार कार्यक्रम-	
ग्रामीण रोजगार के लिए क्रैश योजना (सीएसआरई) 1971	श्रम सघन कार्य और स्थायी परिसंपत्तियों का निर्माण कर प्रत्येक वर्ष 350 जिलों में कृषि के मंदी के समय में कम से कम 1000 खेतिहर मजदूरों को रोजगार प्रदान करना।
प्रायोगिक गहन ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम (पीआईआरईपी) 1972	परिसंपत्तियों का निर्माण कर अकुशल श्रमिकों के लिए अतिरिक्त रोजगार प्रदान करना जिससे दक्षता को बढ़ाकर रोजगार सृजन पर बहुआयामी प्रभाव पड़ सके।
काम के बदले अनाज (एफ़एफडब्ल्यू) 1977	ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारों के लिए अतिरिक्त लाभदायक रोजगार सृजित करना जिससे उनकी आय और पोषण को बढ़ाया जा सके।
राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम (एनआरईपी) 1980	एफडब्ल्यूपी को फिर से तैयार किया गया और इसे 1980 में एनआरईपी नाम दिया गया। इसका मुख्य उद्देश्य

	मजदूरी, रोजगार प्रदान करना और स्थायी सामुदायिक परिसंपत्तियों का निर्माण करना था।
ग्रामीण भूमिहीन रोजगार गारंटी कार्यक्रम (आरएलईजीपी) 1983	मंदी के मौसम में प्रत्येक परिवार के कम से कम एक सदस्य को 100 श्रम दिवसों का सुनिर्धारित रोजगार प्रदान करना।
जवाहर रोजगार योजना (जेआरवाई) 1989	एनआरईपी और आरएलईजीपी दोनों के उद्देश्यों को मिला कर इस योजना को जेआरवाई नाम दिया गया।
इंदिरा आवास योजना (आईएवाई) 1985-86	इसे आरएलईजीपी के घटक के रूप में शुरू किया गया था और बाद में इसे जेआरवाई के रूप में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लाभार्थियों को शत प्रतिशत आर्थिक सहायता द्वारा घर बनाने के लिए शुरू किया गया।
दस लाख कुओं की योजना (एमडब्ल्यूएस) 1998	यह भी आरएलईजीपी का एक भाग थी और बाद में जेआरवाई का एक भाग। इसके अंतर्गत अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लाभार्थियों को शतप्रतिशत आर्थिक सहायता से सिंचाई के लिए खुले कुएँ प्रदान करना था।
सुनिश्चित रोजगार योजना (ईएएस) 1993	अत्याधिक दुर्गम और पिछड़े क्षेत्रों में रोजगार की आवश्यकताओं को पूरा करना और उत्पादक सामुदायिक परिसंपत्तियों का निर्माण कर प्रत्येक गरीब परिवार के अधिकतम 2 व्यक्तियों को 100 दिन का रोजगार प्रदान करना।
सम्पूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना (एसजीआरवाई) 2001	जेजीएसवाई और ईएएस को मिलाकर कार्यक्रम बनाया गया।
अन्य कार्यक्रम–	
वर्षा क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय वाटरशेड विकास परियोजना (एन डब्ल्यू. डी पी आर ए) 1990-91	सभी समुदायिक विकास खंडों में सफल मॉडल का निर्माण करना जिनमें 30 फीसदी से कम क्षेत्र सिंचाई क्षेत्र हैं। ऐसे सूखे क्षेत्रों को हरित क्रांति का लाभ प्रदान करना।

राष्ट्रीय वाटरशेड विकास बोर्ड और समेकित वाटरशेड विकास परियोजना	गैर-वन वाटरशेड का विकास। बंजरभूमि में लघु वाटरशेड का विकास।
कमजोर वर्गों और जनजातीय क्षेत्रों के लिए विशेष कार्यक्रम-	
राष्ट्रीय अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति वित्त एवं विकास निगम (एनएससीएसटीएफडीसी) 1989	अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के गरीब परिवारों और वित्तीय संसाधनों के बीच संपर्क प्रदान करना। कृषि और गैर-कृषि दोनों प्रकार के क्षेत्रों में आय सृजित करने के क्रियाकलापों के लिए रियायती दर पर वित्तीय सहायता प्रदान करना।
जनजातीय उप-योजना (टीएसपी) 1974-75 और अनुसूचित जनजाति घटक (एसटीसी)	सामाजिक आर्थिक विकास की गति को तेज करना।
राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति और अनुसूचित जाति आयोग-2004	सुरक्षा, अधिकार और सामाजिक-आर्थिक विकास का अध्ययन।
समेकित जनजातीय क्षेत्र विकास (आईटीडीपी) 5वीं पंचवर्षीय योजना	टीएसपी के लिए निधियों का निर्धारण। यह टीएसपी की कार्यनीतियों में से एक है। आईटीडीपी को इसे ऐसे खंडों में लागू किया जाता है जहाँ पर 50 फीसदी जनसंख्या जनजातीय हो।
सामाजिक कल्याण एवं सामाजिक सुरक्षा संबंधी कार्यक्रम	
कल्याण कार्यक्रम-	
सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) 1960 का दशक	अधिक खाद्यान्न वाले राज्यों से कम खाद्यान्न वाले राज्यों में खाद्यान्नों की आवाजाही का नियमन।
पुनर्गठित सार्वजनिक वितरण प्रणाली (आरपीडीएस) 1992	ऐसे पिछड़े और दूर-दराज के क्षेत्र जहाँ पर आदिवासियों का बाहुल्य हो, को पीडीएस के अंतर्गत विशेष रूप से शामिल किया गया।
लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली (टीपीडीएस) 1997	यह सुनिश्चित करना कि गरीब और जरूरत मंदों को पीडीएस का अधिकतम लाभ पहुँचे।
सामाजिक सुरक्षा-	
राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम (एनएसएपी) 1995 (1) वृद्धावस्था पेंशन (2) परिवार लाभ योजना (3) मातृ लाभ योजना	संविधान के अनुच्छेद 41 के अनुसार गरीब परिवारों को सामाजिक सहायता प्रदान करने तथा अनु. 42 के अनुसार काम की न्याय संगत और मनवोचित दशाओं एवं प्रसुति सहायता संबंधी नीति-निर्देशात्मक सिद्धांतों को पूरा करना।
न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम-	
ग्रामीण जल आपूर्ति और स्वच्छता-	
राष्ट्रीय जल आपूर्ति योजना (एनआरडब्ल्यूएस) 1954	सफाई और पेय जल की समस्या को दूर करने के लिए संस्था तंत्र का निर्माण किया गया।
त्वरित ग्रामीण जल आपूर्ति कार्यक्रम (एआरडब्ल्यूएसपी) 1972-73	सभी निवासियों को पर्याप्त पेय जल उपलब्ध कराना।
राष्ट्रीय पेयजल मिशन (एनडीडब्ल्यू) 1986	ग्रामीण आबादी के लिए पेय जल की प्रक्रिया को तेज करना। – गिनि कृमि, लौह फ्लोओरोसिस आदि को समाप्त करने के लिए उप-मिशन
केन्द्रीय ग्रामीण सफाई कार्यक्रम (सीआरएसपी) 1986	शुष्क शौचालयों (खुले में शौच) को कम कीमत के स्वच्छ शौचालयों में बदलना।
आवास	
इंदिरा आवास योजना (आईएवाई) 1985-86	अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति और अन्य गरीब परिवारों को निःशुल्क मकान दिए गए।

राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम के अंतर्गत वर्तमान में पांच योजनाएं संचालित की जा रही हैं।

1. **इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना (IGOAPS)**
   शुरूआत - मूलरूप से यह योजना 1995 में राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम (NSAP) के अंतर्गत राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना (NOAPS) के रूप में शुरू हुई
   पुनर्नामकरण - वर्ष 2007 में इसका नाम बदलकर इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना (NGNOAPS) रखा गया।
   लाभार्थी - गरीबी रेखा से नीचे (BPL) जीवनयापन करने वाले 60 वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्ति।